भारत सरकार

परमाणु ऊर्जा विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1418

जिसका उत्तर दिनांक 04.07.2019 को दिया जाना है

स्वदेशी प्रेसराइज्ड हेवी वाटर रिएक्टर की स्थापना

1418. श्री संभाजी छत्रपती :
डा. किरोड़ी लाल मीणा :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने वर्ष 2017-18 के दौरान देश में कुल 7000 मेगावाट की संस्थापित क्षमता के साथ 10 स्वदेशी प्रेसराइज्ड हेवी वाटर रिएक्टर स्थापित करने का निर्णय लिया है;

(ख) यदि हाँ, तो इन रिएक्टरों को स्थापित करने के लिए अब तक हस्ताक्षर किए गए सहमति ज्ञापनों सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) इन रिएक्टरों को स्थापित करने के लिए चिन्हित स्थानों का ब्यौरा क्या है; और

(घ) तत्संबंधी प्रगति की वर्तमान स्थिति क्या है और ये रिएक्टर स्वच्छ उपभोज्य ऊर्जा का उत्पादन कब तक शुरु कर देंगे?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधान मंत्री कार्यालय (डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

(क) जी, हाँ ।

(ख) सरकार ने जून 2017 में फ्लीट मोड में प्रत्येक 700 मेगावाट क्षमता के दस स्वदेशी दाबित भारी पानी रिएक्टर (पीएचडब्ल्यूआर) स्थापित किए जाने के लिए प्रशासनिक अनुमोदन और वित्तीय संस्वीकृति प्रदान की । ये स्वदेशी प्रौद्योगिकी के रिएक्टर, परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्व वाले सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (पीएसयू) न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल) द्वारा स्थापित किए जा रहे हैं ।

(ग) इन रिएक्टरों को निम्नलिखित स्थानों पर स्थापित किया जाना प्रस्तावित है :

स्थान तथा राज्य	परियोजना	क्षमता (मेगावाट)
चुटका, मध्य प्रदेश	चुटका-1 तथा 2	2 X 700
कैगा, कर्नाटक	कैगा-5 तथा 6	2 X 700
माही बाँसवाड़ा, राजस्थान	माही बाँसवाड़ा-1 तथा 2	2 X 700
गोरखपुर, हरियाणा	जीएचएवीपी-3 तथा 4	2 X 700
माही बाँसवाड़ा, राजस्थान	माही बाँसवाड़ा-3 तथा 4	2 X 700

.....2

(घ) वर्तमान में, इन स्थलों पर पूर्व-परियोजना गतिविधियाँ जैसे भूमि अधिग्रहण, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन, पर्यावरणीय क्लिअरेन्स आदि विभिन्न चरणों में प्रगति पर हैं । कैगा और गोरखपुर स्थलों पर भूमि उपलब्ध हैं और चुटका स्थलों पर भूमि अधिग्रहण पूरा हो गया है । माही बाँसवाड़ा स्थल पर यह प्रगत चरण में हैं । चुटका 1 एवं 2 और जीएचएवीपी 3 एवं 4 परियोजनाओं के लिए पर्यावरणीय क्लिअरेन्स प्रदान किया गया है । कैगा और माही बाँसवाड़ा स्थलों के संबंध में पर्यावरणीय क्लिअरेन्स प्रक्रिया के भाग के रूप में जन सुनवाई पूरी हो गई है ।

इसके अतिरिक्त, दीर्घ विनिर्माण चक्र उपकरणों का प्रापण, मानव संसाधन योजना इत्यादि कार्य आरम्भ किए जा चुके हैं । इन रिएक्टरों के क्रमिक रूप से वर्ष 2031 तक पूरे होने की संभावना है ।

*****